हिंदू-मुस्लिम शादी

समस्याएँ और समाधान

दिलीप अमीन

गरुड

Published by
Garuda Prakashan Private Limited
Gurugram, Bharat

www.garudabooks.com
First published in India 2023

Copyright © 2023
Dlip Amin, Ph.D.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher.

No responsibility for loss caused to any individual or organisation acting on or refraining from action as a result of the material in this publication can be accepted by Garuda Prakashan or the Author.

The content of this book is the sole expression and opinion of its Author, and not of the publisher. The publisher in no manner is liable for any opinion or views expressed by the Author. While best efforts have been made in preparing this book, the publisher makes no representations or warranties of any kind and assumes no liabilities of any kind with respect to the accuracy or completeness of the content and specifically disclaims any implied warranties of merchantability or fitness of use for a particular purpose.

The publisher believes that the content of this book does not violate any existing copyright/intellectual property of others in any manner whatsoever. However, in case any source has not been duly attributed, the publisher may be notified in writing for necessary action.

ISBN: 979-8-88575-072-1

Cover Design: Jitender Nigam

Printed in India

अनुक्रम

भूमिका *vii*

अध्याय १: प्रस्तावना

अध्याय २: हिन्दू-मुस्लिम विवाह

- खंड २.१: क्या हिन्दू-मुस्लिम विवाह संभव है? 17
- खंड २.२: निकाह: इस्लामी विवाह-अनुबंध (निकाहनामा) 21
- खंड २.३: मुस्लिम दृष्टिकोण: हिन्दू-मुस्लिम प्रेम से संबंधित छह बिंदु 23
- खंड २.४: एक हिन्दू से प्रेम-संबंधित दस बिंदु 26
- खंड २.५: हिन्दू-मुस्लिम संबंध का सार 29

अध्याय ३: हिन्दू-मुस्लिम प्रेम कहानियाँ

- खंड ३.१: एक मुस्लिम को सलाम 37
- खंड ३.२: एक हिन्दू: अंततः मुझे अनिच्छा से इस्लाम स्वीकार करना पड़ा 40
- खंड ३.३: वह (मुस्लिम) बहुलतावाद का सिद्धांत नहीं समझ सकता 43
- खंड ३.४: एक मुस्लिम युवक से विवाह करने वाली थी, पर अब नहीं 47
- खंड ३.५: विफल प्रेम अथवा समझदारी भरा निर्णय? 50
- खंड ३.६: मुझे ही धर्मांतरण करना होगा (हिन्दू से मुस्लिम), स्पष्ट है कि वह नहीं करेगी 54
- खंड ३.७: वह चाहता है कि मैं मुसलमान हो जाऊँ 56
- खंड ३.८: मुसलमान साथी तभी विवाह करेगी जब मैं धर्मांतरण करूँगा 59
- खंड ३.९: मैं हर नमाज़ में उसके मुस्लिम बनने की दुआ करती हूँ 62
- खंड ३.१०: मुझे मुसलमान बनने से डर लगता है 65
- खंड ३.११: मैं किसी भी कीमत पर अपना धर्म नहीं बदलूँगी 67

- खंड ३.१२: मैं धर्मांतरण नहीं करूँगी 69
- खंड ३.१३: क्या मैं औपचारिकता मात्र के लिए धर्म-परिवर्तन कर सकता हूँ? 72
- खंड ३.१४: विवाह हेतु झूठा धर्म-परिवर्तन 74
- खंड ३.१५: मेरे बच्चों को मुसलमान बनना ही होगा 76
- खंड ३.१६: हिन्दू: मैंने इस्लाम अपनाने का निर्णय ले लिया है 80
- खंड ३.१७: हम हिन्दू विवाह भी करेंगे और निकाह भी 84
- खंड ३.१८: हम पहले हिन्दू और फिर मुस्लिम रीतियों से विवाह करेंगे 86
- खंड ३.१९: मैंने उसे कह दिया है कि मैं धर्म-परिवर्तन नहीं करूँगी 88
- खंड ३.२०: मेरी प्रेमिका पक्की मुसलमान है 93
- खंड ३.२१: प्रेम बनाम पारंपरिक विवाह 95
- खंड ३.२२: एक गुजराती ब्रिटिश मुस्लिम युवती का एक हिन्दू से प्रेम 98
- खंड ३.२३: अपने मुस्लिम माता-पिता को कैसे समझाऊँ? 102
- खंड ३.२४: एक ब्राह्मण युवती और एक शिया मुस्लिम युवक का प्रेम 105
- खंड ३.२५: मैं अपने मुस्लिम माता-पिता को कैसे समझाऊँ कि यह इस्लाम के विरुद्ध नहीं है? 108
- खंड ३.२६: मेरा प्रेमी एक हिन्दू है—एक मुस्लिम लड़की की कहानी 110
- खंड ३.२७: मुझे एक हिन्दू युवक से प्रेम हो गया है 113
- खंड ३.२८: मेरी पत्नी मुझे काफ़िर कहती है... मैं मर जाना चाहता हूँ 115
- खंड ३.२९: जीवन दुष्कर होता जा रहा है... 117
- खंड ३.३०: वह मुझे जब-तब पीटने लगता था 119
- खंड ३.३१: मैं अब एक हिन्दू हूँ—एक भूतपूर्व मुसलमान के जीवन-अनुभव 122
- खंड ३.३२: मैं कॉलेज में एक मुस्लिम युवक से प्रेम कर बैठी... भगवान की कृपा से मैं बच गई। 125
- खंड ३.३३: सैफ़ और करीना का अंतर-धार्मिक विवाह 144

अध्याय ४: सिख-मुस्लिम प्रेम कहानियाँ

- खंड ४.१: समानता पर आधारित सिख-मुस्लिम विवाह 153
- खंड ४.२: एक सिख युवती और एक मुस्लिम का १० वर्षों का साथ 156
- खंड ४.३: मैं अपने प्रेमी से इस्लाम अपनाने के लिए नहीं कह सकती 159

अध्याय ५: जैन-मुस्लिम प्रेम कहानियाँ

- खंड ५.१: एक जैन हिन्दू युवती का एक मुस्लिम युवक से प्रेम 163
- खंड ५.२: एक मुस्लिम युवती का एक जैन युवक से कनाडा में प्रेम 164
- खंड ५.३: एक जैन युवती की एक मुस्लिम से विवाह की योजना 166
- खंड ५.४: एक मुस्लिम युवक और एक जैन युवती का प्रेम 167
- खंड ५.५: मैं एक जैन युवती हूँ और एक मुस्लिम से प्रेम करती हूँ 169
- खंड ५.६: एक मुस्लिम: मैं जैन धर्म अपनाना चाहता हूँ 170

अध्याय ६: धर्म-ग्रंथ

- खंड ६.१: धर्म-ग्रंथ और अंतर-धार्मिक विवाह 173
- खंड ६.२: गीता और अब्राहम-पंथी 176
- खंड ६.३: क़ुरान और हिन्दू 180

अध्याय ७: नियम और क़ानून

- ७.१: अंतर-धार्मिक विवाह एवं तलाक़ संबंधी क़ानून 187

परिशिष्ट अ: शब्दकोष 197

परिशिष्ट ब: InterfaithShaadi.org पर प्राप्त समर्थन 205

अनुक्रमणिका 210

भूमिका

मैंने अपने जीवन में धर्म में कोई रुचि नहीं ली किंतु धर्म का महत्त्व तब मालूम हुआ जब मेरे बच्चे विवाह योग्य हुए। मैं जिस बहुलतावादी (pluralist) संस्कारों के साथ बड़ा हुआ उसमें मेरे लिए अन्य लोगों के विशिष्टतावादी (exclusivist) विचारों को हज़म करना मुश्किल था।

मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे कुछ संबंधियों व मित्रों ने विवाह करने हेतु अपना धर्म-परिवर्तन कर लिया है। वे या तो शहादा की क़सम उठाकर मुस्लिम हो गए हैं अथवा गिरजाघर (चर्च) में विवाह-पूर्व होने वाले अनुबंध पर हस्ताक्षर करके उन्होंने अपने भावी बच्चों को भी ईसाई बनाना स्वीकार कर लिया है। वे मुझे अधिक विस्तृत जानकारी देने से बचते रहे और मेरे सवालों को वे उनके निजी जीवन में दख़ल मानते थे। ऐसे में सच की खोज के लिए मैंने अपने आस-पास नज़र दौड़ाने की जगह वैश्विक स्तर पर खोज शुरू की और २००९ में इंटरनेट-आधारित एक संगठन (Interfaithshaadi.org) शुरू किया जो समानता पर आधारित अंतर-धार्मिक (interfaith) विवाह के विषय पर उन्मुक्त चर्चा और जानकारी के लिए था।

मेरे इस मंच (संगठन) की ख्याति बढ़ती गई और अब मेरे पास विभिन्न लोगों के २५,००० से अधिक विचार अथवा टिप्पणियाँ हैं, और इन विचारों से वर्तमान पीढ़ी की समझ, मानसिकता एवं झुकाव परिलक्षित होता है। अंतर-धार्मिक प्रेम में लिप्त ऐसे युवा अपने माता-पिता अथवा अपने मित्रों से अपने प्रेम संबंधित समस्यायों की खुलकर चर्चा नहीं करते किंतु उन्होंने मेरे साथ बहुत मामूली बातें भी सहजता से साझा कीं (मैं उनसे एडमिन के उपनाम से बात करता हूँ)। इन सभी युवाओं के साथ चर्चा ने मुझे अंतर-धार्मिक विवाहों से संबंधित समस्याओं को समझने का अवसर प्रदान किया, और मुझे विशिष्टतावादी विचारों से पीड़ित व्यक्तियों के दुःख अनुभव करने का भी अवसर मिला।

अनुमानतः १२०० से अधिक युवाओं को उनके अंतर-धार्मिक प्रेम के बारे में परामर्श देकर मैंने एक समानता पर आधारित अंतर-धार्मिक विवाह का संदेश देने का प्रयास किया है। मेरे विचारों और परामर्श का अनुसरण कर इन युवाओं ने मुझे संबल दिया है कि मैं सही राह पर हूँ।

इस पुस्तक के साथ मैं पूरे विश्व भर में धार्मिक बहुलतावाद और एक-दूसरे की आस्थाओं के प्रति आदरभाव रखने का संदेश देना चाहता हूँ। मैंने युवाओं और उनके माता-पिता के लिए कई यूट्यूब वीडियो[1] संदेश दिए हैं, और आशा है कि आपको ये उपयोगी लगेंगे।

इस पुस्तक में कई व्यक्तियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान है। पहले-पहल तो मैं उन सभी ५००० से अधिक लोगों का धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने समानता पर आधारित अंतर-धार्मिक विवाह से संबंधित अपने विचार हमारे मंच (interfaithshaadi.org) पर रखे। मैं उन १२०० से अधिक अंतर-धार्मिक प्रेमियों का भी धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने अपने निजी अनुभव मेरे साथ साझा किए। ऐसे संदेशों और अनुभवों ने ही मेरी इस पुस्तक को आकार और स्वरूप दिया है। इनमें ४५ से ज़्यादा हिन्दू-मुस्लिम युवकों के प्रेम अनुभवों या प्रेम कहानियों को इस पुस्तक में भी रखा गया है। हमें नहीं पता कि कई प्रेम कहानियों में आगे क्या हुआ क्योंकि युवाओं ने बाद में हमसे और व्यक्तिगत विवरण पर चर्चा नहीं की है।

मैं अभिषेक शर्मा को मेरी पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण (Interfaith Marriage: Share and Respect with Equality, Mount Meru Publication, 2017[2]) का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं दुष्यंत गौतम को भी आलोचनात्मक समीक्षा करने और अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रदान करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। दीपक कोतवाल, सौरभ गौर, डॉ. वरुण खरबंदा और एडवोकेट सुधीर गुप्ता ने अपनी टिप्पणियों से इस पुस्तक को लाभान्वित किया है। हालाँकि, ऐसा भी संभव है ये सभी समीक्षकगण इस पुस्तक में प्रस्तुत विचारों से सहमत न हों। मैं मेहंदी डिजाइन के लिए एकता पटेल, मेहंदी कलाकृति के लिए जानकी पटेल और फोटोग्राफी के लिए आदित्य पटेल को धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं अपनी पत्नी श्रीमती राजू अमीन को भी कोटि-कोटि धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने १६ वर्षों तक मुझे इस योजना पर काम करने के लिए प्रतिदिन सहयोग दिया।

—**दिलीप अमीन** (पी.एच.डी.)

---

[1] https://www.youtube.com/user/InterfaithShaadi/videos

[2] अमेज़न, पोथी और गरुड प्रकाशन पर उपलब्ध है।

अध्याय १: प्रस्तावना

यह पुस्तक समानता (equality) पर आधारित अंतर-धार्मिक विवाह को बढ़ावा देने के लिए लिखी गई है। यह अंतर-धार्मिक संबंधों में आने वाली समस्याओं पर प्रकाश डालती है जिससे कि अंतर-धार्मिक युगल और उनके माता-पिता लाभान्वित हो सकें। अंतर-धार्मिक विवाहों के बारे में जागरूकता फैलाकर लेखक चाहते हैं कि विश्व में धार्मिक बहुलतावाद (pluralism) और सद्भाव (सहनशीलता, true respect for other faiths) को बढ़ावा मिले।

हम न तो अंतर-धार्मिक विवाह के पक्ष में हैं और न ही विपक्ष में, और न ही हम किसी को प्रेम विवाह के लिए हतोत्साहित करना चाहते हैं। हमारी मंशा है कि हम आपको एक सूझ-बूझ से भरा निर्णय लेने में सहायता कर सकें।

यह पुस्तक अंतर-धार्मिक विवाह के बारे में कोई हवाई बातें अथवा लफ़्फ़ाज़ी नहीं करती। अपनी बातों और तर्कों को सिद्ध करने के लिए लेखक ने ग्रंथों, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों एवं अंतर-धार्मिक विवाहों से संबंधित क़ानूनों आदि की सहायता ली है। इसके अतिरिक्त ४५ से ज़्यादा हिन्दू-मुस्लिम युवाओं के जीवन-अनुभव भी इस पुस्तक में सम्मिलित किए गए हैं।

मानव के विकास के साथ यह विश्व एक वैश्विक गाँव का रूप धरता जा रहा है और इसी कारण विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों का एक-दूसरे से संवाद बढ़ रहा है जिसके फलस्वरूप अंतर-धार्मिक विवाहों की संख्या भी बढ़ रही है; ऐसे विवाहों के प्रति रुझान भविष्य में और बढ़ेगा, ऐसा मेरा मानना है।

अधिकतर अंतर-धार्मिक विवाहों में टकराव विवाह से कुछ महीने पहले शुरू हो जाता है, और कुछ मामलों में यह पहली संतान के जन्म के कुछ ही महीने पहले शुरू होता है। इस पुस्तक का उद्देश्य युवाओं को शिक्षित करना है ताकि वे अपने अंतर-धार्मिक संबंध को विवाह में बदलने से पहले एक सोचा-समझा निर्णय ले सकें।

किसी धर्मगुरु के लिए धार्मिक सद्भाव का पाठ पढ़ाना अथवा उस पर भाषण देना बहुत आसान है किंतु एक अंतर-धार्मिक युगल के लिए अपने दैनिक जीवन में अपनी-अपनी धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण आने वाली समस्याओं का हल निकालना बहुत मुश्किल होता है। दुर्भाग्यवश, अधिकतर अंतर-धार्मिक युगल

अपने साथी की धार्मिक आस्था से नितांत अनभिज्ञ होते हैं; यहाँ तक कि अपने धर्म के बारे में भी उनका ज्ञान आधा-अधूरा ही होता है।

किसी भी अंतर-धार्मिक संबंध के प्रारंभिक दिनों में धर्म जैसे संवेदनशील मुद्दों पर दलील करना सही नहीं होता क्योंकि ऐसा करने से इन संबंधों के मध्य रूमानी भावनाएँ आहत हो सकती हैं। किंतु फिर भी, ऐसे युगलों को ऐसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर समय रहते ही बात कर लेनी चाहिए। ऐसी चर्चाओं के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और चुने हुए प्रसंग (जिन पर बात होनी ही चाहिए) इस पुस्तक में दिए गए हैं।

अब्राहमिक एवं सनातनी आस्थाएँ*		
धर्म	**यहूदी, इसाई इस्लाम**	**हिन्दू, बौद्ध जैन, सिख**
मूल विश्वास	एकेश्वरवाद, विशिष्टतावाद	बहुलतावाद
ख़तना	हाँ	नहीं
अन्तिम क्रिया	दफ़न	दाह संस्कार
मृत्योपरांत मान्यता	क़यामत का दिन	पुनर्जन्म
*सभी धर्म ऐसा अक्षरशः पालन नहीं करते। यह एक व्यापक मार्गदर्शन हेतु है।		

चित्र १: अब्राहमिक एवं सनातनी आस्थाओं में मूलभूत अंतर।

अगर इतिहास में झाँकें तो सनातनियों (Dharmic; हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख) और अब्राहम-पंथियों (Abrahamic; यहूदी, ईसाई, मुसलमान) के बीच विवाह दुर्लभ ही थे, किंतु अब ऐसे विवाह सामान्य हैं और इनकी संख्या निरंतर बढ़ रही है। *चित्र १* में सनातनी और अब्राहमिक धर्मों की आस्थाओं में अंतर को दिखाया गया है। लेखक द्वारा किए गए सर्वेक्षण में यह पाया गया कि ३८% अमरीकी सनातनी युवा अब्राहम-पंथियों से विवाह करते हैं।[3]

इसी तरह ४५% (४५.१% महिलाओं सहित) अमरीकी मुसलमान अपने धर्म के बाहर शादी करते हैं।[4] अमेरिका में ईसाइयों और यहूदियों के अंतर-धार्मिक विवाहों के प्रतिशत लगभग समान (४०-५०%) हैं।

[3] https://www.interfaithshaadi.org/the-changing-landscape-of-hindus-in-america-an-interfaith-marriages-survey/

[4] https://www.interfaithshaadi.org/the-changing-landscape-of-muslims-in-america-a-survey-of-interfaith-marriages/

इस पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य हिन्दू-मुस्लिम संबंध में लिप्त युवाओं का संवेदनशील धार्मिक मुद्दों पर मार्गदर्शन करना है। किंतु लेखक सभी अंतर-धार्मिक प्रेमी जनों और उनके परिवारों को सावधान करना चाहते हैं कि अंतर-धार्मिक विवाह की पगडंडी पर चलना आसान नहीं है।

लेखक यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि इस पुस्तक का उद्देश्य किसी भी धर्म अथवा आस्था की आलोचना करना नहीं है, किंतु अंतर्विरोध व असमानताओं का उल्लेख करना आवश्यक है। लेखक यह अपेक्षा करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने वाले सभी पाठकगण शिक्षित ज्ञानीजन हैं और वे इस पुस्तक में दी गई सूचनाओं (जो अनेक प्रसंगों में गले नहीं उतरती) का चयन अपने विवेक से करेंगे। हमें यह आशा है कि सभी पाठकगण इस पुस्तक के उद्देश्य 'समानता पर आधारित अंतर-धार्मिक विवाह' की सराहना करेंगे और इसे बढ़ावा भी देंगे।

सबसे अच्छा तो यह होगा कि सभी अंतर-धार्मिक युगल इस बात को मान लें कि प्रत्येक धर्म के धर्म-ग्रंथ मसीहाओं अथवा ऋषि मुनियों द्वारा लिखे गए थे और उनकी व्याख्या उस समय के संदर्भ में ही की जानी चाहिए। किंतु यदि कोई व्यक्ति यह मानता है कि ये धर्म-ग्रंथ ईश्वर का सीधा संदेश हैं और इनका अक्षरशः पालन होना चाहिए, तब उसके साथी को यह मान लेना चाहिए कि ऐसा विश्वास उनके भावी वैवाहिक जीवन को निश्चित ही नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।

आजकल कॉलेज के जीवन में स्वयं को धर्मनिरपेक्ष (secular) घोषित करना एक चलन हो गया है, और इसी कारण एक विशिष्टतावादी (पृथकतावादी, exclusivist) व्यक्ति को पहचानना मुश्किल हो जाता है। इस पुस्तक में पाठकों की सुविधा के लिए बहुत सारी जानकारियाँ भी दी गई हैं जिनकी सहायता से आप अपने साथी के विशिष्टतावादी विचारों को पहचान सकते हैं।

अधिकतर अब्राहमिक पंथ एकेश्वरवाद (monotheist), विशिष्टतावाद (exclusivism), एवं श्रेष्ठतावाद (superiority) में विश्वास रखते हैं। वहीं दूसरी ओर सनातनी अधिकतर बहुलतावादी (pluralist) होते हैं। अब्राहम-पंथियों को अपने धर्म के प्रति श्रद्धा दिखाने के लिए किसी विशेष धार्मिक संस्था से जुड़ना पड़ता है और किसी-न-किसी धार्मिक समारोह से भी गुज़रना पड़ता है। इन समारोहों अथवा

परंपराओं को हमने इस पुस्तक में BBS के नाम से संबोधित किया है। जिसका अंग्रेजी में अर्थ है **B**aptism (बप्तिस्मा), **B**ris, bar mitzvah (बार मित्स्वा), **S**hahadah (शहादा), sunnat (सुन्नत), khatna (ख़तना), आदि। ऐसी विशिष्टतावादी परंपराओं के कारण दो अब्राहम-पंथियों के बीच विवाह करने में भी मुश्किलें आती हैं क्योंकि एक व्यक्ति ऐसी दो परंपराओं से नहीं गुज़र सकता। ऐसी धार्मिक छाप (religious label) लगाना सनातनी धर्मों में भी होता है परंतु न तो सनातनी समाज और न ही धर्मगुरु किसी पर ऐसा करने का इतना दवाब डाल सकते हैं।

चित्र २ : अब्राहमिक धर्मांतरण समारोह

अधिकतर मामलों में दोष धर्म-ग्रंथों का नहीं होता अपितु उस व्यक्ति विशेष ने उन ग्रंथों से जो सीखा वह दोषपूर्ण होता है। हमें यह आशा है कि यह पुस्तक सनातनी-अब्राहमिक युगलों को ऐसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के लिए प्रेरित करेगी जिन्हें वे अनदेखा कर चुके हैं। हालाँकि इस पुस्तक के कुछ खंडों को पढ़ना असहज हो सकता है, परंतु हमें आशा है कि अधिकतम लाभ के लिए अंतर-धार्मिक प्रेमीजन इसे एक-दूसरे के साथ पढ़ेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के हर क्षेत्र में समानता की अपेक्षा होती है। एक अंतर-धार्मिक विवाह में धार्मिक स्वतंत्रता की अपेक्षा भी इससे भिन्न नहीं है, हालाँकि इसे परिभाषित करना थोड़ा कठिन है। इसके अतिरिक्त प्रेम के प्रारंभिक दिनों में धार्मिक विभिन्नताओं को अनदेखा कर दिया जाता है, किंतु यही विभिन्नताएँ (major points of conflicts) विवाहोपरांत गंभीर समस्या बन जाती हैं। लेखक का उद्देश्य सही अथवा ग़लत का निर्धारण करना नहीं है अपितु ऐसे प्रेमी जोड़ों को वह विषय उपलब्ध कराना है जिस पर चर्चा कर वे एक सूझ-बूझ भरा निर्णय ले सकें। आप धार्मिक स्वतंत्रता को कैसे भी परिभाषित करते हों, लेखक की यही कामना है कि आपका अंतर-धार्मिक विवाह दीर्घायु हो।

पिछले १६ वर्षों में लेखक ने बहुत से अंतर-धार्मिक युगलों का मार्गदर्शन किया और इस विषय से संबंधित कई लेख लिखे और व्याख्यान[5] भी दिए। ये सभी लेख युवाओं द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर आधारित थे। अध्याय ३–५ मुस्लिम-सनातनी आस्थाओं के युगलों के लिए लिखे गए हैं। अध्याय ६ में धर्म-ग्रंथों के विवादित बिंदुओं पर और अध्याय ७ में अंतर-धार्मिक विवाह एवं तलाक़ संबंधी क़ानूनों पर लिखा गया है।

लेखक से १२०० से अधिक युवाओं ने परामर्श हेतु संपर्क किया जिनमें से ४५ से अधिक हिन्दू-मुस्लिम लोगों के जीवन के वास्तविक अनुभवों को इस पुस्तक में सम्मिलित किया गया है।

लोग कहते हैं कि **प्रेम का कोई धर्म नहीं होता**। हमने पाया कि धर्म प्रेम की प्रारंभिक अवस्था में तो छिपा रहता है, लेकिन नियोजित विवाह से ठीक पहले धर्म एक बड़ी ताक़त लेकर सामने आता है। अंत में, बच्चे के जन्म के बाद, प्रेम व्यावहारिक रूप से गायब हो जाता है और केवल धर्म ही बचता है।

लेखक का अनुभव कहता है कि प्रारंभ में सभी युवा अपने प्रेम में सहनशील होते हैं और अपने साथी के धर्म के साथ सहज होते हैं, किंतु अपने माता-पिता अथवा समाज के तुष्टीकरण के लिए वे धीरे-धीरे असहिष्णु हो जाते हैं। अंत में,

[5] https://www.youtube.com/user/InterfaithShaadi/videos

लेखक को यही अनुभव हुआ कि अधिकतर अंतर-धार्मिक प्रेमी एक 'समानता पर आधारित अंतर-धार्मिक विवाह' के लिए तैयार नहीं थे।

इस पुस्तक के साथ लेखक की यही कामना है कि धार्मिक विशिष्टतावाद के प्रति जागरूकता बढ़े क्योंकि यही धर्मांधता (bigotry) प्रेमियों और विवाहित अंतर-धार्मिक युगलों में पीड़ा का कारण बनती है। लेखक का एकमात्र ध्येय धार्मिक सद्भाव और बहुलतावाद को बढ़ावा देना है।